Research Guru
Online Journal of Multidisciplinary Subjects (ISSN : 2349-266X)
Volume-13, Issue-4, March-2020
www.researchguru.net

गुणवत्ता युक्त शिक्षक के लिए ईनपुट् से ज्यादा आउटपुटस सबसे महत्व का

प्रा. नरेन्द्रकुमार जी. नाई

(अेम.अे., अेम. अेड., नेट) अेस. अेस. पटेल कोलेज ओफ एज्युकेशन

narendrabhainayee@gmail.com Mo. 9824971819

सारांश: *गुणवत्ता युक्त अध्ययन (शिक्षण) के लिए आंतरिक और बाह्य दोनो लाक्षणीकताओ पर संपूर्ण भार रखना चाहिए। श्रवन, कथन, वाचन और लेखन जीस विधार्थीयों के पास योग्य वयकक्षा के प्रमाण में विकासशील होगी वो गुणवत्ता युक्त शिक्षण सरलता से समज सकेगे। कोलेजों में शुरु करने में आयी हुई मिशन के लीए ईम्प्लीमेन्टेशन स्ट्रकचर देने में विधार्थीयों के साथ संस्थाका संचालको को एकत्रित कराने में आये तो शिक्षा के गुणवत्तालक्षी बनाने के लिए सोने में सुगंध मिल सकेगा।*

कीरूप शब्द: गुणवत्ता-जिसमे सही गुण सामेलहो वही, शिक्षक-पढाई करानेवाला,इनपुट- अंदरका, आउटपुट- बाहरका

सभी विद्यार्थीओंको गुणवत्ता युक्त शिक्षण मिलता रहे एसे शुभ सन २००२ से बनाये गये 'राईट टु एज्युकेशन' के (I.T.I.) कायदे पर काम हो रहा था और अपने यहाँ अप्रिल २०१० में उसका अमल करने में आया हैं। फिरभी अभी उसके सकारात्मक मुदे गिनने में मुश्केली है। गुणवत्ता युक्त अध्ययन (शिक्षण) के लिए आंतरिक और बाह्य दोनो लाक्षणीकताओ पर संपूर्ण भार रखना चाहिए। गुणवत्ता के द्वारा शिक्षणकी जांच करने के लिए अधिकतर दो बातों पर भार रखना चाहिए।

(१) विद्यार्थीयो की क्षमता और

(२) विद्यालय और कोलेज का पर्यावरण.

विद्यालय कोलेज में अध्ययन करते विधार्थीयों कितने प्रमाण में अध्ययन करते विधार्थीयों कितने प्रमाण में अध्ययन कर सकते हैं। उसका आधार उनकी श्रवण, कथन, वाचन और लेखन की शक्ति कितनी हैं। उसके पर आधार रखता है। श्रवन, कथन, वाचन और लेखन जीस विधार्थीयों के पास योग्य वयकक्षा के प्रमाण में विकासशील होगी वो गुणवत्ता युक्त शिक्षण सरलता से समज सकेगे। परंतु जो विधार्थीयों में ये चार कौशल्य कम मात्रा में दिखाई देते हो तो उसके लिए आधुनिक द्रश्य-श्राव्य उपकरण जैसे कि रेडीयो टेलिवीजन, टेपरेकोर्ड, कोम्प्युटर और अेल.सी.डी. जैसी टेकनोलोजीका उपयोग करके विधार्थीयों में रही कमीयोंको दूर कर सकते हैं। शिक्षण के प्रति समज और तर्क शक्ति कीतनी ज्यादा है। वैसे आउटपुटस पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए।

प्राथमिक शिक्षणकी गुणवत्ता सुधारने के लिए क्षमता केन्द्र शिक्षण का अभिगम स्वीकृत कीया गया है। क्षमता केन्द्र शिक्षण अभिगम की सफलता का आधार शिक्षक पर हैं। शिक्षककी सफलता उसके आयोजन पर है।

कोई भी प्रव्ृति आयोजन पूर्वक हो तो समय और शक्ति का व्यव होता नहीं। आयोजन और प्रवृत्ति ध्येयलक्षी बनता हैं। और उसकी फलश्रुति योग्य दिशाकी मिलती हैं। आयोजन में ध्येय उसके सिध्धि को प्रक्रियाओं के लिए व्यवस्था उसकी योग्य नियंत्रण ओर संचालत हो और सतत मुल्यांकन होते रहना चाहिए।

विधालय में शिक्षक अध्यापन कार्य करने तब क्षण क्षण का आयोजन पूर्वक उपयोग हो वेसा करना चाहिए । विधार्थीयों की एक एक क्षण उपयोगी हैं । मानव संपति का योग्य उपयोग के साथ मानव संपति का विकास होना चाहिए । कितने समयमें कितनी विषय वस्तु और क्षमता का विकास करने का है, उसका स्पष्ट ख्याल होना चाहिए । ईसके लिए योग्य पूर्व सामग्री की तैयारी करनी चाहिए ।

अध्यायन सही आयोजन पूर्वक की ध्येयलक्षी प्रवृत्ति हो तो ही अध्ययन की उपज अच्छी तरह हो सकती है । शिक्षक को उसकी व्यावसायिक कारकीर्दी दरम्यान आयोजन पूर्वक कामगीरी करनी चाहिए । शिक्षक को समग्र दैनिक कामगीरी आयोजन पूर्वक ही होनी चाहिए । ईसके लिए आयोन के पीछे समय लगाने से सही परीणाम मीलता है । शिक्षक या अध्यापक पूर्वज्ञान की जानकारी विषयांग की स्पष्टता क्षमता सिध्धि के लिए अध्ययन अनुभव स्वअध्ययन कार्य वगेरे सोपाने से अध्ययन के सोपानों से वाकेफ हों तो उंची गुणवत्ता युक्त शिक्षण दे सकेगें ।

शिक्षण के बदलाते हुए परिवर्तन को ध्यान में रखने से विद्यालय का ईन्फ्रास्ट्रकचर फेसीलीटी शिक्षको की संख्या जैसे ईनपूटस पर ध्यान केंद्रित करने में आ रहा है । विद्यालय में भौतिक सुविधाओं जैसे के विद्यालय में संपूर्ण रुप कमरे, विद्यार्थीयों को बेहने के लिए योग्य व्यवस्था, प्रयोगशाला, प्रार्थना होल, कम्प्युटर लेब खेल कुद के मेदान, पुस्तकालय जैसी सभी सुविधाए हो परंतु विद्यालय में शैक्षणीक और बिन शैक्षणिक स्टाफ के लिए प्रमाण में न हो तो शिक्षण की गुणवत्ता बनी रहती नही । कितनी ही बार कहना हों तो एसा भी कह सकते है : कि भौतिक वातावरण योग्य है शैक्षणिक बिनशैक्षणिक स्टाफ भी उपलब्ध हो । परंतु ईस शैक्षणिक और बिन शैक्षणिक स्टाफ के पास उपलब्ध प्रमाण में ज्ञान नहीं अथवा तो शिक्षक बनने के लिए जो पदवी होंने से उसकी कम पदवी वाले शिक्षको का निमणुक करने में आए तो भी योग्य गुणवत्ता बनी रहती नहीं । कितनी ही परिस्थिती में विद्यालय का पर्यावरण ईसके साथ साथ योग्य होना चाहिए । जीस स्थान पर विद्यालय आयी हुई है । पर्यावरण ईसके साथ साथ योग्य होना चाहिए । तो स्थान पर विद्यालय आयी हुई है । उसकी आजु बाजु ध्वनियुक्त वातावरण हो तो भी उसकी सीधी असर शिक्षा पर पडती दिखाई देता हैं । साथ साथ जो शिक्षक है : उनकी आंतरिक शक्तियों का विकास हो और ईस शक्तियों का विकास हो और ईस शक्तियों विधार्थीयो तक पहुचा । ईस प्रकार का तनाव मुक्त वातावरण हो तो शिक्षा में गुणवत्ता अपने आप विकासशील बनती हैं । जिसके कारण शिक्षण में अपेक्षित परिवर्तन आता हैं ।

शिक्षको के लिए निवास स्थान की व्यवस्था विद्यालय को करनी चाहिए । कितनी बार शिक्षक १०० कि.मी. दूर से आते हैं । और एसे शिक्षक खूद ही शारीरीक रुप से थक जाते है । जिसके कारण खुद के पास ज्ञान होंने के बावजूद भी विधार्थीयो को दे सकते नहीं शिक्षा की गुणवत्ता सुधारने के लिए एक चेर पर्सन की निमणूंक जिसे विद्यालय में करनी चाहिए । और उसके हाथ के निचे अन्य शिक्षको की निमणूंक करके गुणवत्तालक्षी शिक्षक किस तरह दे सकता है । उसकी पूरे वर्ष दरम्यान का आयोजन किया जाय तो जरुर ही सफलता प्राप्त हो सकती हैं । विद्यालय में शिक्षकों को समयांतर दरम्यान योग्य विषयलक्षी तालीम देनी चाहिए और उन्हें अन्य विषय के बारे में साथ देने के लिए सरकार ने समयांतर पर विशेष प्रकार की शिबिर, सेमीना आदी का आयोजन करना चाहिए । विद्यालय के पास प्रमाण मात्रा में शिक्षक रहे परंतु बदलाती हुई

परिस्थिती को आधार पर उनके पास योग्य विषय सज्जता नहीं होती शिक्षा की गुणवता में आर्थिक वृध्धि होता दिखाई देती नहीं हैं।

अभी गुजरात की कोलेजो के लिए एक अच्छी घटना आकार ले रही हैं। जिसमें नोलेज कोन्सोर्टियम आयु गुजरात (के.सी.जी) उच्च शिक्षण विभाग द्वारा सत्य की, विविध युनिवर्सीटीयो के साथ जुडे हुए कोलेजो के आचार्य के लिए शैक्षणिक वर्ष २०१२-१३ के लिए ओरिईन्टेशन और प्लानिंग के लिए एक कार्य शिबिर का आयोजन किया गया था। उच्च शिक्षा में गुणात्मक परिवर्तन लाने के लिए 'मिशन के लिए ईमप्लीमेन्टेशन स्ट्रकचर' नाम के ढाचे की रचना की गई है। ईस हाथे में गुजरात की १४३ आर्टस ,कोमर्स , सायन्स और बी.एड. कोलेजो में कुल पांच विभाग में विभाजीत कीया गया है। सही अध्यापक को झोनल की ओडीनेटर्स डिस्टीक को-ओर्डीनेटर्स और कलस्टर को ओर्टीनेटर की जवाबदारी सोपी गई है। जिसके कारण कोलेजो में चलती विविध प्रवृत्तियो जैसे कि ट्रेनींग रीसर्च आदी बातों का खुब ही जल्दी सुचारु आयोजन हो सकेगा। कोलेजो के जुथ में बेचने से समग्र राज्य में कीसीभी प्रकारका डेरा गिनती की मिनीटो में प्राप्त हो सकेगा अथवा तो पहुचाया जा सकेगा। जिसके कारण भविष्य के आयोजन के लिए या संशोधन हेतु अर्थ माहिती तुरंत प्राप्त कर सकेंगे ईस मिशन के लिए ईम्लीमेन्टेशन स्ट्रकचर एसा नाम दिया गया है। जिसमे मात्र जिल्ला या तालुका की कोलेज ही नही पर युनीवर्सिटी केम्पस में आए हुए भवनो का भी समावेश करने से उच्च गुणात्मक शिक्षक का स्तर मजबुत बन सके।

कोलेजों में शुरु करने में आयी हुई मिशन के लीए ईम्प्लीमेन्टेशन स्ट्रकचर देने में विधार्थीयों के साथ संस्थाका संचालको को एकत्रित कराने में आये तो शिक्षा के गुणवत्तालक्षी बनाने के लिए सोने में सुगंध मिल सकेगा।

शिक्षा की गुणवत्ता सुधारने के लिए ईस प्रमाण के उपाय कर सकेंगे।

टीचींग एन्ड लर्नींग में संशोधन करके एन.सी.ई.आर.टी. जैसी शैक्षणीक संस्थाओं की मदद प्राप्त करके अधिक अच्छी पदवी का ढाचा तैयार कर सकते है।

- आंतरराष्ट्रीय कक्षा के आधार पर शिक्षा की जांच पध्धति तैयार करनी चाहिए।
- नियमों का पालन करने वाले विद्यालयों को आर्थिक लाभ दे सकते है।
- विविध प्ले ग्राउन्ड में से आते विद्यार्थीयों को शिक्षा समान स्तर लाने के लिए शिक्षको का विशेष तालीम दे सकते हैं।
- कोलेज में आर्थिक वर्गखंड में विद्यार्थीयों की संख्या ८० से अधिक न होनी चाहिए। विद्यालय में ४० विधार्थीयों का वर्ग होना चाहिए।
- विधार्थीयों मे भाषा सज्जता में वृध्धी हो ईसके लिए विद्यालय की पुस्तकालय में विविध भाषाओं का साहित्यीक आयोजनात्मक और खेलकुद मे से संबंधित मेगेजीन की व्यवस्था करनी चाहिए।
- भाषा सजताको बढाने के लिए कोलेज और विद्यालयो में विविधता सभर स्पर्धाओं का आयोजन करना चाहिए।

उपसंहार: इसी तरह गुणवत्तायुक्त शिक्षणमें इनपुट्ससे ज्यादा आउटपुटका महत्व ज्यादा होना चाहिए।

सन्दर्भ सूची:

१ शर्मा रामप्रशाद(२०००),शिक्षण हमारी सफर,बलावबोध,मुंबई.
२ दाशबी.ऍन.(२००१),टीचरएज्युकेशन इन सोसाइटी,नीलकमल पब्लिकेशन,हैदराबाद.